

स्य कामः कामपूरकः । सम्राट् सम्यक् राजमानः शोभमानः भूतस्य भव्यस्य स-  
म्राडीश्वर इति वा । काम्यते सर्वैर्यदुमिष्यतः इति काम इति वा ॥११७॥

श्रीमन्महोदधिरकृते वेददीपे मनोहरे । रुक्नादिवाचनान्तोऽयं (57.) द्वादशो  
ऽध्याय ईरितः (58.) ॥१२॥ ॥

अथ काण्वशाखायां पाठविशेषः ॥

I. ॥ १-३ ॥ १-३ ॥ ४ - पक्षौ ॥ ४ ॥ स्तोम - शफाः ॥ ५ ॥ सुपणौऽसि  
- पत । ५ ॥ ६ ॥ ६-१४ [डुरोणसत्] ॥ ७-१५ ॥ १५-१७ ॥ १६-१८ ॥ ॥

II. ॥ १८-२३ [वीलुं] ॥ १-६ ॥ २४-२९ ॥ ७-१२ ॥ ३० ॥ ॥

III. ॥ ३०-४४ [कामाः स्वाहा] ॥ १-१५ ॥ ४५ ॥ ॥

IV. ॥ ४५-५१ [इलामग्रे] ॥ १-७ ॥ ५२-५४ [योनाऽअसीषदन्] ॥ ८-१० ॥  
५५-६१ [योनाऽअभारुखा] ॥ ११-१७ ॥ ६२ ॥ ॥

V. ॥ ६२-६७ [सुम्रया] ॥ १-६ ॥ ६८ ॥ ७ ॥ ६९ [कर्तमस्मे] ॥ ८ ॥ ७०-  
७४ [सजोषसाऽअश्विना - इलया -] ॥ १-१३ ॥ ७५ ॥ ॥

VI. ॥ ७५-७७ [प्रतिगृणीत] ॥ १-३ ॥ ७८-८० [समिताऽइव] ॥ ४-६ ॥  
८१-९१ [अवयतीः समवदन्त दिव -] ॥ ७-१७ ॥ ९२-९४ ॥ १८-२० ॥  
९७ ॥ २१ ॥ ९५ [द्विपच्चतुष्यदस्मा] ॥ २२ ॥ ९६ [संवदन्ते] ॥ २३ ॥  
९८ ॥ २४ ॥ १०१ ॥ २५ ॥ १०० ॥ ॥

VII. ॥ १०२-११७ [समालेको] ॥ १-१६ ॥ ११६ ॥ ॥ सप्तानुवाकेषु षोडशा-  
धिकं शतम् ॥ ॥

इति काण्वीयायां वाजसनेयसंहितायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ ॥

I. मयि गृह्णाम्यग्रेऽग्निं रायस्योषाय सुप्रजास्त्राय सुवीर्याय ।

मामु देवताः सचन्ताम् ॥ १ ॥